Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

इतिहास के आइने में भारतीय ज्ञान प्रणाली

डॉ. खुमेश सिंह ठाकुर* डॉ. जी. एल. मालवीय**

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) सुभद्रा शर्मा शासकीय कन्या महाविद्यालय, गंजबासौदा, जिला- विदिशा (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) सुभद्रा शर्मा शासकीय कन्या महाविद्यालय, गंजबासौदा, जिला- विदिशा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरूद्धार और अनुकूलन राष्ट्र की समद्ध बौद्धिक विरासत को संरक्षित करने के साथ-साथ इसे आधुनिक समाज की मांगों के साथ सरेखित करने के लिए महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक रूप से भारत दार्शनिक विचारधाराओं का अग्रणी रहा है जिसकी समद्ध परम्पराओं की व्यापता प्राचीन से लेकर समकालीन समय तक है। इसमें वेद, उपनिषद, सांख्य, योग, मीमांसा और साथ ही जैन धर्म और बौद्ध धर्म शामिल है जिसकी परिणिति भक्ति दार्शनिक पराम्परा और आधुनिक काल में स्वामी विवेकानन्द जैसे आधुनिक विचारकों के योगदान में हुई है। इन शिक्षाओं के केन्द्र में मानव आत्म-सुधार आत्म-खोज यात्रा के विभिन्न मार्ग और एक दैवीय संबंध की खोज का चिंतन निहित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने एक व्यापक रूपरेखा प्रदान की है जो शैक्षिक पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल करने को प्रोत्साहित करती है, जो सीखने के लिए एक समग्र और समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में इसके महत्व पर प्रकाश डालती है। वर्तमान परिपेक्ष्य में यह सर्वोपरि है कि भारतीय अपने अस्तित्व की प्राप्ति के लिए खुद को मन के उपनिवेशवाद से मुक्त करे। इस उद्देश्य पूर्ति के लिए भारतीय ज्ञान पराम्परा का पालन करना महत्वपूर्ण है जिसमें आत्म-ज्ञान के लिए सभी आवश्यक तत्व शामिल है और यह मानव जीवन और अनुभव के हर पहलू का समाधान प्रदान करती है।

प्रस्तावना – प्राचीन सिंधु घाटी की सभ्यता से लेकर आज तक भारत की बौद्धिक परंपराओं में जिज्ञासा परीक्षण और अन्वेषण की भावना आ रही है सदियों से भारतीय विद्वान वैज्ञानिक और दार्शनिक नवाचार के मामले में सबसे आगे रहे हैं और मानव ज्ञान तथा समझ की सीमाओं को आगे बढाते रहे हैं **'भारतीय ज्ञान'** काफी हद तक परंपरा पर आधारित है। मानव सभ्यता की उदय से ही परंपराएं पीढ़ी दर पीढ़ी निरंतर रूप से आगे बढ़ती रही, जो भारतीय सभ्यता को दुनिया की सबसे पुरानी जीवित सभ्यता बनती हैं। साथ ही परंपराओं में सुधार भी होते रहे हैं और **'भारतीय ज्ञान'** विकसित होता रहा है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरुद्धार और अनुकूलन राष्ट्र की समृद्ध बौद्धिक विरासत को संरक्षित करने के साथ-साथ ऐसे आधुनिक समाज की मांगों के साथ संरक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण है जो सीखने के लिए एक समग्र और समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में इसके महत्व पर प्रकाश डालती हैं।

भारत 'ज्ञान भूमि' शब्द का साक्षात उदाहरण है। यह पहचान न केवल उल्लेखनीय कलाओं, वस्तुकला, खगोल विज्ञान, विज्ञान, चिकित्सा (आयुर्वेद), भाषण, साहित्य, दर्शन और इंजीनियरिंग के उद्भव और प्रसार से स्थापित होती हैं बल्कि वैदिक साहित्य, वेद, उपनिषद और उपवेद जैसे विशिष्ट प्रणालियों और ज्ञान ग्रन्थों की विद्यमानता से भी होती है जिन्होंने प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत का मार्गदर्शन किया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान के व्यवस्थित संचरण को दर्शाती है। इस बात को रेखांकित करना जरूरी है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली महज एक परंपरा के बजे एक व्यवस्थित संरचना है और ज्ञान हस्तांतरण की प्रक्रिया है।

भारतीय ज्ञान शुद्ध के साथ कुछ अनोखा है जो जो प्राचीन काल से भारतीय उपमहाद्वीप में ज्ञान के निरंतर प्रवाह को दर्शाता है। अनूठी विशेषता यह है कि 'भारतीय ज्ञान' का उद्देश्य व्यक्ति के समग्र विकास के लिए उसे भौतिकवादी और आध्यात्मिक जीवन के लिए योग्य बनाना है विष्णु पुराण कहता है 'सा विद्या या विमुक्तये' इस प्रकार ज्ञान का उद्देश्य मुक्ति (दुख और बंधन से) के रूप में परिभाषित किया गया है। ईषावास्योपनिषद में आध्यात्मिक ज्ञान को विद्या और भौतिक ज्ञान को अविद्या कहा गया है। मण्डक उपनिषद में विद्या 'पराविद्या' और अविद्या को 'अपरा विद्या' कहा गया है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली ने अध्ययन शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला के माध्यम से जीवन, समाज और ब्रह्मांड को समझने के लिए व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किए हैं। आयुर्वेद और योग से लेकर वेदांत और न्याय की दार्शनिक अंतर्दृष्टि तक भारतीय ज्ञान प्रणाली स्थायित्व और सद्भाव में निहित बहुलवधि परंपरा का उदाहरण है भारतीय ज्ञान प्रणाली का अध्ययन करने का उद्देश्य जिज्ञासा और प्रश्न पूछने के वैकल्पिक तरीकों के प्रति व्यक्तियों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाना है इसका उद्देश्य ज्ञान के बारे में दृष्टिकोण को बदलना और वैज्ञानिक विचारधारा की संरचना को नया रूप देना है। मूलभूत रूप से इसका उद्देश्य ज्ञान परंपराओं के बारे में चिंतन की लिए एक वैश्विक दृष्टिकोण विकसित करना है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – प्राचीन काल से ही भारत के कई सत्ताओं का सामना किया है जिन्होंने इसकी समृद्ध अर्थव्यवस्था का दोहन करने और इसके समृद्ध सांस्कृतिक मूल्यों, दार्शनिक परंपराओं और मान्यताओं को खंडित करने की कोशिश की है। प्राचीन काल से लेकर मध्यकालीन और आधुनिक काल तक के युगों में भारत ने अपनी ज्ञान व्यवस्थाओं, सांस्कृतिक विरासत और मूल्य प्रणालियों को सफलतापूर्वक संरक्षित किया है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में प्रलेखित ज्ञान के क्षेत्र में वेद ज्ञान के सबसे पुराने ग्रंथ हैं। संस्कृत में वेद का अर्थ है 'ज्ञान'। इस प्रकार आदर्श रूप से

कोई भी ज्ञान वेद का ही एक हिस्सा है। हालांकि, विद्वानों की दृष्टि से वेद के ज्ञान को चार वेदों– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अर्थववेद के रूप में प्रलेखित किया गया है। चार उपवेद भी है– आयुर्वेद (चिकित्सा का अध्ययन) गंधर्ववेद (प्रदर्शन कलाओं का अध्ययन) धनुर्वेद (धनुर्विद्या और युद्ध का अध्ययन) और शिल्पवेद (वास्तुकला का अध्ययन)। वेदों में दार्शनिक और व्यवहारिक ज्ञान दोनों शामिल है। उपनिषद् दार्षनिक शिक्षाओं का ध्यान केंद्रित करते है। वेदों की अवधारणा को सरल भाषा में समझाने के लिए पुराण लिखे गए हैं। इनकी पांच विशेषताएं हैं, जैसे ब्राह्मण की रचना, उनका विनाश और जीर्णोद्धार, देवताओं और कुलपिताओं की वंशावली मनु के शासनकाल जिन्हें मन्वंतर कहा जाता है, और राजाओं की जाति का इतिहास। वैदिक परंपरा से 18 पुराण और 18 उपपुराण और जैन परंपरा के तीन पुराण है।

भारतीय दर्शन के अभिन्न अंग उपनिषद् मानसिक और शारीरिक अवस्थाओं से भिन्न आत्म के सार की खोज करते हैं। वे दो मार्ग प्रस्तुत करते हैंरू निवृत्ति (अनासक्त आत्मज्ञान) और प्रवृति (सहज क्रिया) अद्वैत वेदांत जो अपने अद्वैतवाद के लिए जाना जाता है, जो मानता है कि आत्मा और ब्रह्म एक समान है और अनुभवजन्य दुनिया माया (भ्रम) के रूप में है। इसी तरह भट्ट मीमांसा 'आत्मा' की परिवर्तनकारी लेकिन शाश्वत प्रकृति की खोज करती है जैन धर्म में जीव और अजीव का द्वैतवाद और बौद्ध धर्म में कर्म और पुनर्जन्म के नैतिक उत्तारदायित्व को मानते हुए स्थायी 'स्व' को अस्वीकार किया जाता है।

मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन ने भक्ति में निहित एक दार्षनिक परिवर्तन को विशिष्ट रूप दिया और समानता पर जोर दिया। दक्षिण भारत (7वीं–12वीं शताब्दी) और उत्तरी क्षेत्रों (12वीं–17वीं शताब्दी) तक इसका प्रसार था। श्री चेतन्य महाप्रभु, श्री तुलसीदास, श्री कबीर, और श्री नानक जैसे संतों ने शगुण और निर्गुण परंपराओं के माध्यम से ईश्वर के प्रति एक निष्ट भक्ति और प्रेम को बढ़ावा दिया और भक्ति–आस्था के माध्यम से मुक्ति की राह दिखाई। इस आंदोलन ने स्थानीय भाषाओं और सार्वभौमिक भाईचारे के महत्व को रेखांकित किया।

आधुनिक काल में स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंदो और सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे समकालीन दार्शनिकों ने भारतीय ज्ञान परंपरा के सार को महत्वपूर्ण रूप से रेखांकित किया। विवेकानंद ने तर्कसंगतता, शिक्षा और सार्वभौम धर्म के सिद्धांतों पर बोल दिया जिसे वे 'मानवतावाद' के रूप में परिभाषित करते हैं। इसके अलावा वे सत्य और सेवा के मूल्यों को जीवन के मूल सिद्धांतों के रूप में देखते हैं। विवेकानंद की दार्षनिक संरचना इस विचार पर आधारित है कि प्रत्येक आत्मा में अंतर्निहित देवत्व होता है जिसे आत्म प्रयास, अनुशासित प्रशिक्षण और उचित शैक्षिक मार्गदर्शन के माध्यम से अनुभव किया जाता है। सर्वपल्ली राधाकृष्णन का दर्शन अद्वैत वेदांत में निहित है जो भारतीय दर्शन की एक और गैर–द्वेतवादी परंपरा है। इसी तरह सर अरविंदो के दार्शनिक विचार आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रकृतिवाद और व्यावहारिकता के संश्लेषण को प्रस्तावित करता है उनका तर्क है कि आध्यात्मिकता, रचनात्मकता और बौद्धिकता एक स्वस्थ व्यक्ति के विकास के लिए आवश्यक घटक है।

इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली एक गतिशील और विकासशील सांस्कृतिक संरचना और परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है जिसने अपने मूल विचारों और सिद्धांतों को बनाए रखते हुए सतत रूप से विभिन्न ऐतिहासिक कालों के लिए स्वयं को ढाला है। इसके घटक चित्त, शरीर और आत्मा के बीच आवश्यक संबंधों को रेखांकित करते हैं। यह प्रणाली सांस्कृतिक पहचान को मान्यता देती है और संरक्षित करती है, अंतर– सांस्कृतिक संचार को बढ़ावा देती है और विभिन्न क्षेत्रों में वैश्विक दृष्टिकोणों को समृद्ध करती है जो भौतिक और आध्यात्मिक कल्याण की खोज को शामिल करता है और सभी तत्वों की परस्पर निर्भरता को स्वीकारता है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली वर्तमान परिपेक्ष्य में – औपनिवेशिक शासन के प्रारंभ से ही भारतीय ज्ञान परंपराओं को जानबूझकर हाशिए पर डाल दिया गया। मैकाले के 'मिनट ऑन एजुकेशन' 1835 में वर्णित औपनिवेशिक शिक्षा नीतियों ने स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को न्यूरोसेंट्रिक (पश्चिमीकरण) प्रतिमानों से बदलने का प्रयास किया जिससे भारतीयों की कई पीढ़ियां अपनी बौद्धिक विरासत से दूर हो गई। आधुनिक काल में उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया वैश्विक स्तर पर विभिन्न उपनिवेशवादियों और औपनिवेशित आबादी के बीच भिन्नताओं को दशति हुए कई सार्वभौमिक चरणों और मौलिक सिद्धांतों को शामिल करने के रूप में व्यापक रूप से जाने जाती है। इन सिद्धांतों में भूमि और संसाधन का विनियोग, औपनिवेशिक उद्यमों के लिए खेती और स्वदेशी सांस्कृतियों और परंपराओं का योजनाबद्ध रूप से विघटन शामिल है। जब औपनिवेशिक ताकतों ने भारतीय क्षेत्रों को अधीन किया तो उन्होंने न केवल भारत की अर्थव्यवस्था को तबाह कर दिया बल्कि शिक्षा प्रणाली परंपराओं, प्रशासन, वास्तुकला और सांस्कृतिक परिपाटियों में हस्तक्षेप सहित विभिन्न तरीकों से भारतीय आबादी पर औपनिवेशिक मानसिकता भी थोपी। जिसका सबसे गंभीर प्रभाव चेतना के दायरे में हुआ।

उपनिवेशीकरण से मुक्त होने से में स्वदेशी ज्ञान के महत्व को बहाल करना शामिल है। चेतना को समझने और सत्य को जानने के साधन के रूप में भारतीय दर्शन मन (मानस) को बहुत महत्व देता है स्वयं (आत्मा) को समझना व्यक्तित्व कल्याण (सुख) और परम मुक्ति (मोक्ष) को बढ़ावा देता है। सांख्य, न्याय और वेदांत जैसी भारतीय परंपराएं नैतिकता और अस्तित्व समझने के लिए और रूपरेखा प्रदान करती है जो मन, शरीर और आत्मा के बीच परस्पर क्रिया पर जोर देती है। भारतीय दर्शन की खोज जीवन के संतापों का निवारण और दुख (संसार) से मुक्ति पाने से उत्पन्न हुई है। चार्वक भौतिकवादियों को छोड़कर अधिकांश विचारधाराओं ने सच्चे आत्म के बारे में अज्ञानता को दूर कर मुक्ति (मोक्ष या निर्माण) प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित किया है।

वर्तमान समय में जब भारत अपनी प्राचीन विरासत के अनुरूप वैश्विक मंच पर अपनी मौजूदगी पुन: स्थापित करने प्रयास कर रहा है तो भारतीय जनता के लिए यह जरूरी है कि वह औपनिवेशिक मानसिक अधीनता के अवशेषों से खुद को मुक्त करें और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से फिर से जुड़े। ऐतिहासिक रूप से भारत दार्शनिक विचारधाराओं का अग्रणी रहा है जिसकी समृद्ध परंपराओं की व्याप्तता प्राचीन से लेकर समकालीन समय तक है, इसमें वेद, उपनिषद, साख्य, योग, मीमांसा और साथ ही जैन धर्म और बौद्ध धर्म शामिल है जिसकी परिणिति भक्ति दार्शनिक परंपरा और आधुनिक काल में स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंदो, सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे आधुनिक विचारकों के योगदान से हुई है। इन शिक्षाओं के केंद्र में मानव आत्म–सुधार, आत्मा–खोज, यात्रा के विभिन्न मार्ग और देवीय संबंध की खोज का चिंतन निहित है।

दार्शनिक परम्पराएं दु:ख से मुक्ति और अस्तित्व के सच्चे अर्थ की

अवधारणाओं से जुड़ी हुई है। इन दार्शनिक आयामें के साथ-साथ भारतीय ज्ञान परम्परा ने सभी के लिए संधारणीयता और समानता पर सतत रूप से जोर दिया है। इसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं पर चिंतन भी शामिल है, जिसमें पर्यावरण संरक्षण भी शामिल है प्रत्येक गांव के जंगलों और पेड़ों के प्रबंधन में औषधीय पौधों, ईंधन की लकड़ी और निर्माण सामग्री की स्थायी तौर पर कटाई के लिए एक कुशल कार्य प्रणाली शामिल थी जो उनके प्राकृतिक रूप से नवीनीकरण की गति के अनुरूप थी भारत की स्वदेशी शिक्षा प्रणाली और कौशल विकास पद्धतियों से कई स्वदेशी भारतीय उद्योग धंधे फले-फूल और भारत में निर्मित सामान को दुनिया भर में सराहनीय महत्व दिया गया। इन भारतीय ज्ञान प्रणालियों के ऐतिहासिक महत्व का मूल्यांकन उनके आर्थिक मूल्य के संबंध में उस समय करना आवश्यक है जब उनके महत्व की तुलना आज के उच्च तकनीक उद्योग से की जा सकती है। 5वीं शताब्दी में फले-फूले महान गणितज्ञ और खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने गणित और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। शून्य एवं दशमलव प्रणाली पर उनके अग्रणी कार्यो ने इन विषयों में महत्वपूर्ण प्रगति की नींव रखी। आर्यभट्ट ने यह क्रांतिकारी विचार भी प्रस्तुत किया कि पृथ्वी अपनी दूरी पर घूमती है, जो उनके समय से बहुत आगे की अवधारणा है। प्रसिद्ध संस्कृत व्याकरणविद पाणिनि ने अष्टाध्यायी विकसित की, जो भाषा विज्ञान पर एक व्यापक ग्रंथ है और अपनी गहराई तथा परिष्कार में अद्वितीय है। पतंजलि के योग सूत्र जो दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के हैं, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण की खोज में दुनिया भर के लाखों लोगों को प्रेरित करते हैं और उनका मार्गदर्शन करते रहे हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में, आयुर्वेद की प्राचीन भारतीय प्रणाली को स्वास्थ्य और कल्याण के लिए इसके समग्र दृष्टिकोण के वास्ते विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मान्यता दी गई है। आयुर्वेद पर दो मौलिक ग्रंथ चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में मानव शरीर रचना विज्ञान, शरीर विज्ञान और औषध विज्ञान के बारे में बहुमूल्य ग्रंथ है। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, नवाचार और उत्कृष्टता के उदाहरणों से भरी पड़ी है। प्राचीन भारतीय के जटिल धातु विज्ञान से लेकर जंतर-मंतर वैधशालाओं के परिष्कृत खगोल विज्ञान तक, विज्ञान प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित की दुनिया में भारत के योगदान को नकारा नहीं जा सकता।

भारतीय ज्ञान प्रणाली- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 - भारत सरकार ने भारत की ज्ञान प्रणालियों को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, जिससे गर्व और सांस्कृतिक प्रशंसा की भावना फिर से जागृत हुई है। पुरावशेषों के प्रत्यावर्तन ने इस पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन जैसे देशों से उल्लेखनीय वापसी हुई है। इन प्रयासों ने न केवल भारत की खोई हुई विरासत को पुन: प्राप्त करने में मदद की है, बल्कि देश की प्राचीन संस्कृति पर नए सिरे से गर्व भी जताया हैं। इसके अलावा, कई आईआईटी में भारतीय ज्ञान प्रणालियों के लिए उत्कृष्टता केन्द्रों की स्थापना एक दूरगामी पहल है जिसका उद्देश्य आयुर्वेद, योग पारंपरिक भारतीय गणित जैसे क्षेत्रों में अंत: विषय अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना है। ये पहल हमारी समृद्ध बौद्धिक विरासत के साथ गहरा संबंध बढ़ा रही है और सांस्कृतिक गौरव तथा नवाचार के एक नए युग को प्रेरित कर रही है।

आयुर्वेदिक, योग और अन्य पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों को बढ़ावा देने की सरकार की पहलों ने भी प्रभावशाली परिणाम दिए हैं। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान की स्थापना ने इन प्राचीन चिकित्सा प्रणालियों को मानकीकृत वह लोकप्रिय बनाने में मदद की है। इसके अतिरिक्त 9 नवंबर 2014 को आयुष मंत्रालय की स्थापना ने पारंपरिक भारतीय चिकित्सा प्रणाली को काफी बढ़ावा दिया है। मंत्रालय ने आयुर्वेद, योग प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध तथा होम्योपैथी चिकित्सा पद्धतियों को मानकीकृत और लोकप्रिय बनाया है, जिससे मुख्य धारा की स्वास्थ्य सेवा में उनकी अधिक स्वीकृति हुई है और उन्हें उसमें शामिल किया गया है। इसके अलावा, योग को वैश्विक मंच पर ले जाने के सरकार के प्रयासों के भी लाभकारी परिणाम सामने आए हैं, संयुक्त राष्ट्र ने 2014 में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया, जो कल्याण और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में भारत की स्थायी विरासत का प्रमाण है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरुद्धार और अनुकूलन राष्ट्र समृद्ध बौद्धिक विरासत को संरक्षित करने और इसे आधुनिक समाज की मांगों के साथ सरेखित करने के लिए महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने एक व्यापक रूपरेखा प्रदान की है जो शैक्षिक पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल करने को प्रोत्साहित करती है, सीखने के लिए एक समग्र और समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में इसके महत्व पर प्रकाश डालती हैं। यह नीति पारम्परिक ज्ञान को समकालीन वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के साथ एकीकृत करने का अनूठा अवसर प्रदान करती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए, यह आवश्यक है कि शैक्षणिक संस्थान प्राचीन ज्ञान प्रणालियों को वर्तमान चुनौतियों का सामना करने के तरीकों से अनुकूलित करने के लिए विद्वानों और चिकित्सकों के साथ सहयोग करें। पुनरुद्धार की प्रक्रिया सैद्धांतिक चर्चाओं से आगे बढ़नी चाहिए और इसमें ज्ञान के विशाल भंडार को प्रलेखित (दस्तावेजित) करने और संरक्षित करने के लिए व्यावहारिक प्रयास शामिल होने चाहिए जो विभिन्न रूपों, जैसे कि ग्रंथ, मौखिक परम्पराएं, अनुष्ठान और स्थानीय प्रथाएं है। इस ज्ञान को सूचीबद्ध करने और इसे भावी पीढ़ियों के लिए सुलभ बनाने के लिए महत्वपूर्ण शोध किए जाने चाहिए। इसके अलावा, यह पता लगाने के लिए की अंतर विषयी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिससे भारतीय ज्ञान प्रणाली सम्पोषणीय विकास, स्वास्थ्य सेवा, कृषि और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्र में कैसे योगदान दे सकता है।

भारतीय ज्ञान मीमांसा संरचना में आत्म-अस्तित्व की धारणा ने अपना सर्वोच्च महत्व बनाएं रखा है। आज के वैश्विक युग में यह समझना आवश्यक है कि पूरी दुनिया में सूचनाओं की बाढ़ आई हुई है लेकिन ज्ञान की कमी है। दुनिया एक भ्रम का रूप ले रही है परिणामवश हम पर्यावरणीय मुद्दों, जलवायु परिवर्तन, भूख और महामारी जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं और हम जो कुछ भी हासिल करते हैं वह अक्सर मानव जीवन की कीमत पर होता है। भारत की दार्शनिक विचारधारा में पर्यावरण को जड़ ना मानकर क्रियाशील एवं जुड़ी हुई व्यवस्था माना जाता है, जहां मानव अन्य प्रणालियों के साथ मिलकर रहते हैं। प्रकृति के अस्तित्व को पवित्र तथा पूजनीय समझा जाता है। भारतीय ज्ञान संस्कृति में, गुरु-शिष्य परम्परा एक प्राचीन परंपरा है जिसमें गुरु शिष्य को ज्ञान प्रदान करता है और इसकी जड़े वैदिक काल से हैं ऋग्वेद में गुरु को 'आत्मज्ञान का स्रोत और प्रेरक व्यक्तिगत विकास की आधारशिला' के रूप में वर्णित किया गया है। गुरु और उसके शिष्य के बीच का रिश्ता एक मां और उसके अजन्मे बच्चों के बीच के रिश्ते जैसा होता है। वैदिक काल के अंत में एक विशिष्ट प्रकार का साहित्य विकसित हुआ जिसे

सूत्र कहा जाता है। यह साहित्य वेदों से विशेष रूप से वेदांगो से गहराई से जुड़ा हुआ है। छह वेदांग है: शिक्षा, व्याकरण, छंद, निरुक्त, कल्प और ज्योतिष। इस परिपेक्ष्य में अपनी जड़ों को स्वीकार करना और विश्व का मार्गदर्शन करना महत्वपूर्ण है जैसा कि भारत ने प्राचीन काल से परम्परागत रूप से किया है। इसलिए इन बदलते समय में यह सर्वोपरि है कि भारतीय अपने अस्तित्व की प्राप्ति के लिए खुद को मन से उपनिवेशवाद से मुक्त करें।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान प्रणाली को उपनिवेशीकरण से मुक्त करने की प्रक्रिया में– भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरुद्धार और अनुकूलन राष्ट्र समद्ध बौद्धिक विरासत को संरक्षित करने के साथ-साथ इसे आधुनिक समाज की मांगों के साथ संरेखित करने के लिए महत्वपूर्ण है। भारतीय ज्ञान प्रणाली महज एक परंपरा के बजाय एक व्यवस्थित संरचना है और ज्ञान हस्तांतरण की प्रक्रिया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली ने अध्ययन शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला के माध्यम से जीवन, समाज और ब्रह्मण को समझने के लिए व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किए हैं। भारत 'ज्ञान-भूमि' शुद्ध का साक्षात उदाहरण है। यह पहचान न केवल उल्लेखनीय कलाओं, वास्तुकला, खगोल विज्ञान, चिकित्सा (आयुर्वेद) भाषाओं, साहित्य दर्शन और इंजीनियरिंग के प्रसार और उद्भव से स्थापित होती है, बल्कि वैदिक साहित्य वेद उपनिषद और उपवेद जैसे ज्ञानग्रन्थों और विशिष्ट प्रणालियों को विद्यमानता से भी होती है। जिन्होंने प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत का मार्गदर्शन किया है। भारत बौद्धिक परम्पराओं में जिज्ञासा, परीक्षण और अन्वेषण की भावना रही है, सदियों से भारतीय विद्वान वैज्ञानिक और दार्शनिक नवाचार के मामले में सबसे आगे रहे हैं और मानव ज्ञान तथा समझ की सीमाओं को आगे बढ़ाते रहे है, जो भारत की ज्ञान प्रणालियों के महत्व और देश की वृद्धि एवं विकास में योगदान करने की क्षमता पर प्रकाश डालता है। जैसे-जैसे हम अपनी समृद्ध बौद्धिक विरासत के खजाने को खोलते हैं, हम नवाचार, खोज और प्रगति के एक नए युग को प्रज्वलित करते हैं जो चराचर जगत की उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली, भारतीय दर्शन (दो खंड), राजकमल प्रकाशन, 2014
2. कौशाम्बी, डी. डी., प्राचीन भारत : एक परिचय, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, 2012
3. थापर, रोमिला भारत का इतिहास, पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2015
4. हबीब, इरफान, भारतीय इतिहास में निबंध: एक मार्क्सवादी दृष्टिकोण की ओर, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2018
5. दासगुप्ता, सुरेन्द्रनाथ, भारतीय दर्शन का इतिहास (पांच खंड), मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, 2004
6. दत्त, बिभूतिभूषण और सिंह, अवधेश नारायण, हिन्दू गणित का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, 2004
7. जिमर, हेनरिक, भारतीय कला और सभ्यता के दर्शन, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2015
8. मैकडोनेल, ए. ए., वैदिक माइथोलॉजी, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, 2002
9. गोण्डा, जान, वैदिक साहित्य, ओटो हैरासोवित्ज वेरलाग, 1975
10. सांकृत्यायन, राहुल, बौद्ध दर्शन, किताब महल, 2009

****